विधानों की ही तरह प्रायः रूढ़ और शुक्ल जी के शब्दों में, साम्प्रदायिक है। ... नीरसक नए हैं।

प्रश्न 4: निराला के काव्य में यथार्थ चेतना का वर्णन कीजिए।

उत्तर : छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का स्वर्ण युग है। इसमें निराला एक ऐसे आत्मचेता कवि थे जिनमें एक ओर अनुसरण एवं अनुकरण दोनों के व्यामोह से मुक्त उनके व्यक्तित्व में अदम्य जिजीविषा थी तो दूसरी ओर आधुनिकता के मोह में अनावश्यक बहक के स्थान पर अतीत संस्कृति के प्रति आस्था। उन्होंने सांस्कृतिक गौरव को उद्भासित करने वाली 'राम की शक्तिपूजा', 'पंचवटी प्रसंग,' 'यमुना के प्रति', शिवाजी का पत्र', तुलसीदास' जैसी अतीतोपजीवी रचनाओं का प्रणयन अवश्य किया है लेकिन जहाँ भी उनमें युगधर्म का आवेग एवं तेवर पूर्णरूपेण उजागर

Scanned with CamScanner

हुआ है। छायावादी काव्य जब सपनों की सुरभित मदिरा पीकर मानस के रंगमहल में सतरंगी कामनाओं के ताने बाने को बुनता, इर्द–गिर्द मंडराते, बिखरे, छटपटाते यथार्थ से आँखें मूँदे था तब भी निराला ने साधनहीनता की बेबसी, ग्लानि का आत्मपीड़न और उच्च वर्ग के दमनचक्र से शोषित–प्रताड़ित लोगों की भीड़ का अवलोकन किया और उस अनंत लोगों की भीड़ में उन्होंने देखा–भिंचता, कुचला जाता, दम तोड़ता मानव।

यथार्थ एवं प्रगति की भावभूमि निराला की काव्यचेतना का प्रमुख वर्ण्य विषय है जिसका अभ्युदय प्रकृति एवं शृंगारपरक रचनाओं के काल में हुआ।

निराला किसी गुट, वाद या विदेशी वैचारिकता के अंधानुकर्ता नहीं बल्कि प्रगतिशील विचारों एवं मानवीय हितों के पोषक थे। उनकी अभिव्यक्ति की हथेलियों ने तब तक मानवता के दरवाजे को खटखटाना अपना धर्म समझा जब तक समूचा कोहरा मोमबत्तियों की तरह पिघल–पिघल कर बिल्कुल बेबाक और बेमानी न हो गया। उनकी रचनाएं साम्यवादी दर्शन का कलात्मक प्रस्तुतीकरण ही नहीं हैं बल्कि उनके मन में निहित करूणा की उपज हैं। उन्होंने लिखा है :

"मैंने मैं शैली अपनाई,
देखा दुखी एक निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में मेरे
झट उमड़ वेदना आई।"

वास्तव में छायावादी कविता काल एक सांस्कृतिक आंदोलन एवं राष्ट्रीय जागरण का युग रहा है। राष्ट्र–प्रेम छायावादी कविता की एक समृद्ध एवं लोकव्यापी पृष्ठभूमि थी। प्रसाद के आंसू में करूणा का स्वर, कामायनी में त्रस्त पीड़ित मानवता को समरसता का संदेश, पंत का मध्यपथ एवं महादेवी की करूणा व्यापक अर्थ में मानवतावादी दृष्टिकोण की द्योतक हैं। इसी मानवतावादी वैचारिकता के लोकव्यापी रूप को निराला ने काव्यात्मक रूप दिया।

निराला ने मानवतावादी धरातल पर खड़े होकर पुरानी फटी झोली का मुँह फैलाते भिक्षुक, चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ती मजदूरिनें, सामाजिक यंत्रणाओं की चक्की में पिसती हुई विधवाओं, पूंजीवादी शोषण प्रक्रियाओं के शिकार कृषकों का अपनी रचनाओं में मार्मिक अंकन किया है जो पूंजीवादी अमानवीय अत्याचार का दस्तावेज बन गया है।

1 देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं। (वह तोड़ती पत्थर)

2 वह आता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को–भूख मिटाने को

Scanned with CamScanner

मुँह फटी–पुरानी झोली का फैलाता
3 झोली से पुए निकाल लिए
बढ़ते कपियों के हाथ दिए।
देखा भी नहीं उधर फिरकर,
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर।
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं, 'धन्य, श्रेष्ठ मानव'।

प्रथम चित्र में मार खा रोई नहीं' में जीवन की दमघोंटू विवशता व्यंजित है। दूसरे में मानव का घिनौना
रूप द्रष्टव्य है, जो सोचने पर मजबूर करता है कि क्या मनुष्य को पेट भरने का सम्मानजनक साधन और
नहीं किया जा सकता। तीसरे चित्र में अध्यात्मवाद के खोखलेपन को उजागर किया गया है।

निराला ने बड़ी गहराई से महसूस किया कि पेट की भूख अनगिनत समस्याओं की उद्भावक है। यह
दया–दान, लंगर–भंडारा या पुरस्कार भेंट से नहीं सुलझ सकती। इसका एकमात्र सुलझाव है–समान
पर समाज और व्यक्ति का नवनिर्माण, परिश्रम में पूंजी का निवास–पूंजी द्वारा परिश्रम की अधीनता।
के अनेक मर्मवेधक चित्र कवि ने अंकित किए हैं :

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार,
हाड़मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार।

निराला की काव्यचेतना शोषितों के मर्मान्तक चित्रों के निरूपण तक ही सीमित नहीं रही बल्कि
सामाजिक, धार्मिक आदि पहलुओं की विडंबनाओं को भी उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से उरेहा। जहाँ समाज में
हो, आर्थिक अपहरण हो, भोले–भाले व्यक्तियों की समाप्ति के लिए लाक्षागृहों की योजना हो, विषमता की
हों और जहाँ पुरोहित, कवि, लेखक, कलाकार आदि राज्य सता के शोषणचक्र के हिमायती हों, वहाँ की
का यथार्थ अंकन निराला ने अपनी कविता 'राजे ने अपनी रखवाली की' में किया है।

सामाजिक यथार्थ को भी कवि ने बड़ी गहराई से उरेहा है। वर्णाश्रम, हिन्दू धर्म की एक व्यवस्था है
मानव सभ्यता के विकास का प्रतीक थी लेकिन धीरे–धीरे अनगिनत विकृतियों के समावेश ने समूचे क्रम को
दिया। निराला ने 'तुलसीदास' कविता में इसका बेबाक वर्णन किया है :

वे टूट चुके थे ठाट सकल वर्णों के;
तृष्णोद्वत स्पर्धागत सगर्व
क्षत्रिय रक्षा के रहित सर्व;
द्विज चाटुकार, हत इतर वर्ग पर्णों के।

Scanned with CamScanner

विवाह समाज का आधार है–जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्म है। लेकिन धीरे–धीरे विवाह प्रणाली में भी अनेक विकृतियाँ समाविष्ट हो गईं। निराला को स्वयं इस समस्या का सामना करना पड़ा। अपनी पुत्री सरोज के लिए योग्य वर खोजने, दहेज देने, बारात बुलाने जैसे अनेक प्रश्न उनके समक्ष आए। कोई वर सामने आया भी तो बड़ी उम्र वाला, कुल पिए हुए दुर्गन्ध से लिपटे चमरौधे चूते पहने हुए और दहेज की माँग लेकर। निराला जी विद्रोह कर कह उठे :

ये कान्यकुब्ज–कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करे छेद,
ऐसे शिव से गिरिजा विवाह,
करने की मुझको नहीं चाह। (सरोज–स्मृति)

निराला की काव्यचेतना के अध्ययन से यह सहज सिद्ध है कि वे मानवतावादी समाजपोषक रूप की प्रतिष्ठापना और लोकविध्वंसक समाज विरोधी रूप का उन्मूलन चाहते हैं। इंग्लैंड के सम्राट एडवर्ड अष्टम ने एक साधारण स्त्री से विवाह के लिए सिंहासन त्याग दिया तो उन्हें नई सभ्यता का अग्रदूत कहकर निराला ने मानववादी समाजपोषक रूप की प्रतिष्ठापना के लिए 'एडवर्ड अष्टम के प्रति' काव्य की रचना की। इसके साथ–साथ समाजविरोधी लोक विध्वंसक रूप के उन्मूलन के लिए कवि ने 'महाकाली के आह्वान' में प्रतीक रूप से भारतीय जनता को ही क्रांति के लिए उद्‌बुद्ध किया है।

Scanned with CamScanner